काशीपुर (गोविसण): ASI का नया उत्खनन

प्रकाशन तिथि: 22 अक्टूबर 2026

स्रोत-रिपोर्ट: 22 अक्टूबर 2026 (द इंडियन एक्सप्रेस)। उत्खनन की शुरुआत की सटीक तारीख स्रोतों में अलग-अलग बताई गई है, इसलिए यहाँ नहीं दी गई।



मौलिक प्रतीकात्मक चित्र: pcsmantra.com

परिचय

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) का उत्तराखंड के **काशीपुर टीले** पर नया उत्खनन-सत्र चल रहा है (द इंडियन एक्सप्रेस, 22 अक्टूबर 2026)। ASI के अनुसार एलेक्ज़ेंडर कनिंघम ने इस स्थल की पहचान चीनी यात्री **ह्वेन त्सांग** के विवरण में आए **गोविसण** (Kiu-pi-shwang-na) से की थी।

प्रमुख तथ्य (रिपोर्ट के अनुसार)

- उत्खनन ASI के देहरादून मंडल द्वारा किया जा रहा है और रिपोर्ट के अनुसार मार्च तक चलने की उम्मीद है; ASI के अधीक्षण पुरातत्वविद् मोहन जोशी के अनुसार उद्देश्य पहले मिली वस्तुओं के वैज्ञानिक प्रमाण खोजना और सांस्कृतिक क्रम (cultural sequence) को गहराई से समझना है।
- यह लगभग 90 एकड़ का टीला है। स्थानीय मान्यता के अनुसार यह द्रोणाचार्य का प्रशिक्षण-स्थल था और पांडवों ने गुरु-दक्षिणा में द्रोण सागर बनवाया (लोक-मान्यता, ऐतिहासिक तथ्य नहीं)।
- पहले ASI ने यहाँ 1939-40, 1965-66 और 1970-71 में खुदाई की थी। इनमें तीन चरणों में बने मंदिर की योजना का बड़ा हिस्सा सामने आया; मंदिर की शुरुआत गुप्त काल में मिट्टी-ईंट के ऊँचे चबूतरे से मानी गई।

- ASI के रिकॉर्ड के अनुसार वहाँ से मिले मृद्भांड बताते हैं कि स्थल पर पेंटेड ग्रे वेयर (PGW) काल से प्रारंभिक मध्यकाल तक बसावट रही; कुषाण, गुप्त और मध्यकालीन मृद्भांड भी मिले हैं।

परीक्षा-उपयोगिता

पुरातत्व, पेंटेड ग्रे वेयर, ह्वेन त्सांग, उत्तराखंड के ऐतिहासिक स्थल।

सांस्कृतिक क्रम और स्थानीय परंपरा

उत्खनन का उद्देश्य पहले मिली वस्तुओं के लिए वैज्ञानिक प्रमाण तथा स्थल का अधिक स्पष्ट सांस्कृतिक क्रम खोजना बताया गया है। स्थानीय महाभारत-संबंधी परंपरा अध्ययन की पृष्ठभूमि है, अपने-आप पुरातात्विक निष्कर्ष नहीं। किसी पुरास्थल से खास मृद्भांड मिलने से किसी महाकाव्य के हर पात्र या घटना की पुष्टि नहीं हो जाती।

पहले की खुदाई मुख्यतः मंदिर की योजना समझने पर केंद्रित थी। रिपोर्ट के अनुसार उससे पूरे स्थल का संपूर्ण सांस्कृतिक क्रम नहीं खोला गया। इसलिए मंदिर के निर्माण-चरण और पूरे टीले की बसावट का क्रम एक ही अध्ययन-इकाई नहीं हैं।

काल, वस्तु और पहचान का प्रमाण

PGW, कुषाण, गुप्त और मध्यकालीन मृद्भांड अलग सांस्कृतिक-काल संकेत देते हैं। अलग काल की वस्तुओं का मिलना लंबे उपयोग की समझ देता है, लेकिन उनके स्थान, परत तथा संदर्भ के अध्ययन के बिना हर वर्ष लगातार बसावट का निष्कर्ष नहीं बनाया जा सकता।

गोविसण से पहचान ऐतिहासिक यात्रा-विवरण और कनिंघम के अध्ययन का संदर्भ है। नया उत्खनन उसी पुराने स्थल की जाँच का अगला चरण है, पहली बार उसकी खोज होने की घोषणा नहीं। मार्च तक चलने की अपेक्षा खुदाई का प्रस्तावित कार्यक्रम है, पूरी हो चुकी खुदाई या अंतिम निष्कर्ष नहीं।

प्रारंभिक परीक्षा शैली: अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. काशीपुर (गोविसण) किस राज्य में स्थित है?

(a) हिमाचल प्रदेश

(b) उत्तराखंड

(c) उत्तर प्रदेश

(d) हरियाणा

▼ उत्तर और व्याख्या

उत्तर: (b) उत्तराखंड। काशीपुर उत्तराखंड के उधम सिंह नगर क्षेत्र में है; ASI ने यहाँ नया उत्खनन शुरू किया है।

प्रश्न 2. काशीपुर की पहचान किस चीनी यात्री के विवरण में आए गोविसण से की गई है?

(a) फाह्यान

(b) ह्वेन त्सांग

(c) इत्सिंग

(d) सुंग युन

▼ उत्तर और व्याख्या
उत्तर: (b) ह्वेन त्सांग। ASI के अनुसार कनिंघम ने काशीपुर की पहचान ह्वेन त्सांग के गोविसण से की थी।

प्रश्न 3. रिपोर्ट के अनुसार काशीपुर के पुराने मृद्भांड किस काल से प्रारंभिक मध्यकाल तक के हैं?

(a) पेंटेड ग्रे वेयर काल

(b) नवपाषाण काल

(c) ताम्रपाषाण काल

(d) मौर्य काल

▼ उत्तर और व्याख्या
उत्तर: (a) पेंटेड ग्रे वेयर काल। ASI रिकॉर्ड के अनुसार स्थल PGW काल से प्रारंभिक मध्यकाल तक आबाद रहा।

स्रोत

- द इंडियन एक्सप्रेस (22 अक्टूबर 2026): https://indianexpress.com/article/india/archaeological-survey-of-india-excavation-kashipur-mahabharata-link-10931463/

इस लेख को डाउनलोड करें: PDF